

# श्री जैन सत्य प्रकाश

(मासिकपत्र)

## विषय दर्शन

- १ श्री तालध्वजतीर्थ मंडन-सत्यदेव-स्तोत्रम् :  
आचार्य महाराज श्रीमद् विजयपद्मसूरिजी : ३६१
- २ दिग्भरणी उत्पत्ति : आचार्य महाराज श्रीमत् सागरानंदसूरिजी : ३६३
- ३ प्रभु श्री महावीरनुं तत्त्वज्ञान : आचार्य महाराज श्रीमद् विजयपद्मसूरिजी : ३६८
- ४ मंभलिपुत्र गोशाल : मुनिराज श्री विद्याविजयजी : ४०२
- ५ दिगम्बर शास्त्र कैसे बने ? मुनिराज श्री दर्शनविजयजी : ४०६
- ६ आपल्या विवरणात्मक साहित्यनुं अंक्षिप्त अवलोकन :  
श्रीयुत प्रो. डीरालाल रसिकदास डापडिया, अम. अ. : ४१२
- ७ तत्त्वार्थसूत्रनी प्रस्तावना-("परिचय") : मुनिराज श्री ज्ञानविजयजी : ४१८
- ८ वसंतविदास (अेक प्राचीन काव्य) : श्रीयुत साराभाइ मणिलाल नवाय : ४२४
- ९ पुरातन इतिहास अने स्थापल :
- (१) मांडवगढ संबंधी लेख : श्रीयुत नन्दलालजो लोढा : ४३०
- समाचार-वर्मानिंदक रेकडो : : पृ. ४३० नी सामे

: विज्ञप्ति :

जे पणथ मुनिराजने "श्री जैन सत्य प्रकाश" मोडकवामां आवे छे तेअेअे पोताना विहार-दिक्का कारखे पहलातुं सरनामुं इरेक मडिनानी सुदी चीज पहिलां अभने लभी जणुआववा कृपा करवी, जेथी मासिक जेरवहले त जतां वजतसर भणी शके.

वार्षिक लवाजम

स्थानिक १-८-०

जहारगामनुं

२-०-०

छुटक अंक

०-३-०

: नेधअे छे :

श्री 'जैन सत्य प्रकाश' ना प्रथम वर्षना २, ३, ७, ८ अंकानी जर छे. जेअे ते मोडकशे तेने सालार स्वीकार करीने पहलासां तेदला अंको मजरे आपवामां आवशे.

मुद्रक अने प्रकाशक : श्रीमन्दास गोडगदास शाह, मणुमुद्रणालय,  
काणपुर, अजुरीनी पोण, अमदावाद.

प्रकाशन स्थान : श्री जैनवर्म सत्यप्रकाशक समिति कार्यालय,  
जेशिंगलाछनी वाडी, धीकांटा, अमदावाद.